International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 4; July 2016; Page No. 51-53

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन

[1] कृष्ण बहादुर सिंह, [2] डॉ0 जय सिंह

[1] वरिष्ठ अध्यापक, शासकीय उच्च0 माध्यमिक विद्यालय, अमरपुर, जिला उमरिया, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन मूल्यों की उपादेयता का अध्ययन पर आधारित है। रवीन्द्रनाथ बालकों का सर्वांगीण विकास चाहते थे, एक पक्षीय नहीं। इस संबंध में उन्हें प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली का आदर्श सर्वथा मान्य था। उनके लिए बालकों के बौद्धिक और मानसिक पक्ष के समान ही शारीरिक, आत्मिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक आदि पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण थे। बालको की वास्तविक उन्नति प्रकृति माता की गोद में ही संभव है। प्रकृति से एकरूपता स्थापित कर वे मानव तथा जीव मात्र से तादात्म्य स्थापित कर सकेंगे। शिक्षा के माध्यम के संबंध में टैगोर ने विदेशी भाषा के माध्यम को अस्वीकार किया है। विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा विश्व के किसी भी सभ्य देश में नहीं प्रदान की जाती। इससे छात्रों का मन विकारग्रस्त हो जाता है और वे अपने ही देश में परदेशी के समान मालूम पड़ते है।

मूलशब्द: रवीन्द्रनाथ टैगोर, शिक्षा दर्शन, मूल्य, उपादेयता।

1. प्रस्तावना
प्रसिद्ध धर्म सुधारक महर्षि देवेन्द्रनाथ के सुपुत्र कविवर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने केवल उच्च कोटि के कवि एवं विचारक थे वरन् एक महान् शिक्षा शास्त्री भी थे। टैगोर का जन्म कलकत्ता में सन् 1861 में 6 मई को हुआ था और साहित्य, कला तथा दर्शन के क्षेत्र में अपनी अनुपम उपलब्धि से भारत के मस्तिष्क को ऊँचा करके एवं संसार में भारत के योगदान का अनुपेक्षणीय सिद्ध करके सन् 1941 में वह गोलोकवासी हुए। टैगोर परिवार अत्यन्त समृद्ध था। सम्पूर्ण बंगाल में यह परिवार अपनी कलाप्रियता, विद्याव्यसन एवं संगीत प्रेम के लिए विख्यात था। टैगोर के पिता देशभक्त, विद्वान एवं धर्मपरायण थे। रवीन्द्रनाथ महर्षि देवेन्द्रनाथ के सबसे छोटे पुत्र थे।
विद्यालय में तो वे नाममात्र को गये। घर में पैसे की कमी थी नही। अतः प्रारंभ में उनकी शिक्षा घर पर जितनी हुई उतनी विद्यालय में नहीं। उन्हें घर पर ही संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, चित्रकला, संगीत आदि की शिक्षा प्राप्त हुई और इन विषयों को पढ़ाने के लिए अलग–अलग शिक्षकों की व्यवस्था की गई थी। सन् 1878 में टैगौर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत गये। इनके साथ इनके भाई भी इंग्लैण्ड गये। इंग्लैण्ड में वे बाइटन विद्यालय में भरती हुए किन्तु इस विद्यालय में वे अधिक दिन न रह सके। यहाँ से वे लन्दन के लिए रवाना हो गये। किन्तु लन्दन में किसी विद्यालय में प्रवेश नही प्राप्त किया।
राजनीतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक कार्यो को करते हुए भी उनकी साहित्य साधना अनवरत रूप से चलती रहीं और महाकवि एवं साहित्यकार के रूप में उनका व्यक्तित्व निखरता गया। टैगोर विश्वकवि थे और गीतांजलि उनका विश्वविख्यात ग्रन्थ है।
टैगोर परमपुरुष में आस्था रखते थे और विश्व के सर्वोच्च शक्ति के रूप में उस महापुरुष को स्वीकार करते थे। उनके लिए परमपुरुष सत्यम, शिवम् एवं अद्वैतम् का प्रतीक है। टैगोर मानव में आस्था रखते थे और उन्हें उच्चकोटि का मानववादी कहा जा सकता है। एक महाकवि होने के नाते उन्होंने संवेगों एवं स्थायी भावों के दमन का परामर्श नहीं दिया है वरन् व्यक्ति की सभी शक्तियों के सामंजस्यपूर्ण विकास का समर्थन किया है।
टैगोर ने शिक्षा के सिद्धान्तों की खोज अपने अनुभव से की है। विश्वभारती के संस्थापक के रूप मे वे एक व्यावहारिक शिक्षा शास्त्री होने का परिचय देते है। शिक्षा शास्त्र में उनकी देनों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे एक उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री थे, यद्यपि उन्होंने अध्यापन का पेशा कभी नही ग्रहण किया। टैगोर ने भारतीय शिक्षा में एक नये प्रयोग का सूत्रपात किया। वे भारतीय आदर्शो से प्रभावित तो थे ही, पाश्चात्य विचारों के प्रति भी वे जागृत थे। उन्होंने अपने शैक्षिक प्रयोग को प्रारंभ करने के पहले रूसो के विचारों से, फ्रोबेल के किण्डरगार्टन स्कूल से तथा डीवी की शैक्षिक विचारधारा से अवश्य परिचय प्राप्त किया होगा किन्तु इनके सिद्धान्तों को वे सर्वत्र सत्य मानने को तत्पर न हुए होंगे।
टैगोर के शिक्षा दर्शन में रहस्यवाद भी पर्याप्त मात्रा में मिलता है किन्तु उनका यह रहस्यवाद स्वस्थ एवं संबल तथा विस्तृत था जबकि फ्रोबेल का रहस्यवाद केवल शैशव तक सीमित था। टैगोर ने रहस्यवाद को जीवन की यथार्थ भूमि पर आधारित किया और इसका विस्तार करके शिक्षा के सभी स्तरों पर इसे लागू किया। टैगोर शिक्षा के क्षेत्र में आत्मवादी थे। प्रायः प्रकृतिवाद अध्यात्मवाद का विरोध करता है किन्तु टैगोर का प्रकृतिवाद एकांगी नही था, इसलिए उनके प्रकृतिवाद की अनिवार्य परिणति आदर्शवाद में हुई और बालकों में उदात्त भावनाओं को जागृत करके उन्हें आध्यात्मिक भूमि पर लाना चाहते थे। आध्यात्मिकता की बात करके टैगोर ने भारत के अतीत का सम्मान किया है और उसी पर वर्तमान को आधारित करना चाहा है।
टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के बहुत बड़े समर्थक थे बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय भावना को जागृत करना चाहते थे। वे अपने राष्ट्र से बहुत प्रेम करते थे और भारतीय राष्ट्र की परिस्थितियों को सुधारना चाहते थे किन्तु उनका राष्ट्र प्रेम संकीर्ण नहीं था। उनकी देश भक्ति और उनका राष्ट्र प्रेम अन्तर्राष्ट्रीयता के मार्ग में बाधक नही था। वे समस्त विश्व को एक समझते थे और हमें इस योग्य बनाना चाहते थे कि हम विश्व–नागरिकता के प्रति सम्मान का भाव रख सकें।

2. अध्ययन का उद्देश्य
1. रविन्द्रनाथ टैगोर कृत मूल ग्रन्थों के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन।
2. रविन्द्रनाथ टैगोर के दार्शनिक विचारों की पृष्ठभूमि में उनके

शिक्षादर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
3. रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण एवं विवेचन करके शिक्षा के स्वरूप को प्रस्तुत करना।
4. भारतीय संदर्भ में प्रस्तावित मूल्यों की शिक्षा, संबंधित विचारों का विश्लेषण एवं विवेचन करके भारतवर्ष में एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की पुर्नस्थापना के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव देना।
5. रविन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन का वर्तमान भारतीय शिक्षा दर्शन एवं मूल्यों की शिक्षा के संदर्भ में उपयोगिता का अध्ययन करना।

3. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक उद्देश्यों एवं शैक्षिक विचारों का वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अजीत, ज्ञान कुमारी (2002)[1], अय्यर, सी.पी. रामास्वामी (1992)[2], ओड, लक्ष्मी लाल (1994)[3], गुप्त, लक्ष्मी नारायण (1992)[4], गुप्ता, एस.पी.(1998)[5], जोशी, शान्ति (1975)[6], लाड, अशोक कुमार (1973)[7], वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद (1972)[8], Tagore [9, 12].

4. शोध कार्य का योगदान

आत्मशिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को एकत्र करना शिक्षा नहीं है। शिक्षा का काम मानव के मस्तिष्क एवं शक्तियों का सृजन करना है। सामान्य मस्तिष्क के अतिरिक्त एक विशिष्ट मस्तिष्क भी होता है जो जीवन एवं विषयों के परे स्थिति है और जो इस संसार में अपना प्रकाशन करता है। इस विशिष्ट मस्तिष्क की अनुभूति करना–कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिक्षा सम्बन्धी आदर्श में संकीर्णता के लिए कोई स्थान नहीं था। वे मानव प्रकृति के किसी भी पहलू को दबाने के पक्ष में नहीं थे और यह विश्वास करते थे कि सभी वृत्तियों का सामंजस्य पूर्ण विकास ही व्यक्ति में पूर्णता ला सकता है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बुद्धि, भावना और इच्छा शक्ति का समान रूप से विकास करने में सहायक हो और साथ ही जो प्रकृति से सामंजस्य और अध्ययन के विभिन्न विषयों में सन्तुलन पैदा कर सके।

5. अध्ययन विधि एवं उपकरण

अनुसंधान का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। अतः शोधार्थी अपने अध्ययन में ऐतिहासिक अथवा लेख्य दस्तावेजी प्रमाण विधि, विश्लेषण एवं विवेचन विधि, वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया है। जहाँ तक अरविन्द घोष के जीवन परिचय, कृतित्व एवं शैक्षिक दर्शन को जानने का प्रयत्न है वहाँ पर ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। मूल्यों की शिक्षा सम्बन्धी विचार का वर्तमान संदर्भ में व्याख्या करते समय वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

6. शिक्षा दर्शन एवं मूल्यों की शिक्षा के संदर्भ में उपादेयता

गुरूदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी मानव एवं प्रकृति की मौलिक एकता में विश्वास करते थे और बालकों को शहर के कृत्रिम वातावरण से दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में शिक्षा देने के समर्थक थे। टैगोर जी चाहते थे शिक्षा मानवीय आवश्यकताओं के अनुसार होनी चाहिए ताकि बालक आगे चलकर एक श्रेष्ठ मानव बने वह अपना निर्णय स्वयं ले तथा विशाल बनाये। टैगोर जी ने शिक्षा में क्रियाओं एवं अनुभवों को सम्मिलित करने पर बल दिया और निष्क्रिय एवं पुस्तकीय शिक्षा का विरोध किया। डॉ. एच.पी. मुखर्जी के अनुसार ''टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरूत्थान के सबसे बड़े पैगम्बर थे। [13] Tagore was the greatest prophet of educational renaissance in modern india.

टैगोर जी एक साहित्यकार, कलाकार, दार्शनिक, चित्रकार ही नहीं थे बल्कि एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे इनके शिक्षा दर्शन की वर्तमान शिक्षा में निम्न उपादेयता है।

6.1 शिक्षा में मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन : गुरूदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर जी ने मनुष्य की सृष्टि में सर्वोच्च स्थान दिया और यहाँ तक कहा कि ईश्वर की प्रगति मानव सेवा से ही हो सकती है। उनके अनुसार ''दैवीय (ईश्वरीय) सत्य की पूर्णता के लिए मानवता आवश्यक तत्व है वे कहा करते थे कि 'मेरा धर्म मानव धर्म है जिसमें ईश्वर मानवता के रूप में परिभाषित है।''

इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होनें शिक्षा में विश्ववादी विचारों का प्रतिपादन किया तथा उसे प्रसारित किया गुरूदेव चाहते थे कि ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा संस्कृति को किसी सीमा रेखा में न बाँधा जाय, इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय का पूरा अवसर दिया जाय, इससे विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हो सकेगा।

6.2 शिक्षा में प्राकृतिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास : टैगोर जी एक साहित्यकार तथा कवि थे इसलिए प्रकृति के प्रति उनकी अनुरक्ति स्वाभाविक थी। इसका प्रभाव उसके शैक्षिक चिन्तन पर पड़ा जिसके कारण उन्होने शिक्षा के प्रकृतिवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। वे बालक की स्वतन्त्रता, शिक्षण विधियों, अनुशासन एवं विद्यालय की व्यवस्था के प्रति प्रकृतिवादी विचार प्रस्तुत किये है। टैगोर जी ने सीधे प्रकृति के सम्पर्क से सीखने की बात कही है, उनके अनुसार बालकों को उनकी रूचि क्षमता तथा योग्यतानुसार स्वतः विकसित होने का अवसर दिया जाना चाहिए, बालक की मानसिक शक्तियों का विकास किसी बन्धन में नही होना चाहिए, इस प्रकार टैगोर जी ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन किया जो वर्तमान शिक्षा में इसकी उपादेयता का वर्णन किया।

6.3 प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृतियों में समन्वय : टैगोर जी ने अपनी शिक्षा योजना में प्राच्य एवं पाश्चात्य संस्कृतियों के समन्वय की बात कही है कि ''मेरी इच्छा है कि इस विश्वविद्यालय के क्षेत्र को धीरे–धीरे सरल ढ़ंगो से विस्तृत किया जाय जब तक कि इसमें आर्य सभ्यता, सेमेटिक सभ्यता, मंगोलियन सभ्यता और दूसरी सभ्यताऐं अपने पूर्व विस्तार के साथ नही समा जाती'' इन्होने माना कि जो पाश्चात्य सभ्यता की अच्छाई उसे पूर्व वाले ग्रहण करे तो देश का विकास सम्भव है।

6.4 सौन्दर्यानुभूति की शिक्षा पर विशेष बल : रवीन्द्रनाथ टैगोर जी जहाँ विश्व विख्यात कवि थे वही अद्वितीय कलाकार भी थे, प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति इनका लगाव था वे सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसे शाश्वत मूलों को प्राप्त करने के लिए सौन्दर्यानुभूति आवश्यक माना इसे अपनी शिक्षा योजना में सम्मिलित किया इसी के आधार पर संगीत, नृत्य, पेंटिग, नृत्य, अभिनय, कविता आदि की शिक्षा दी जाती है शिक्षा की ऐसी व्यवस्था जो वर्तमान शिक्षा के लिए आदर्श माना जाता है।

6.5 नैतिक शिक्षा का महत्व : गुरूदेव शिक्षा द्वारा नैतिक आचरण के सुदृढ़ीकरण पर बल दिया। टैगोर का कथन है कि यदि मनुष्य भौतिक सुखों के पीछे भागना प्रारम्भ करेगा तो उसका आचरण पशुवत हो जायेगा। टैगोर जी की धर्म एवं नैतिकता को एक दूसरे

से अलग नही मानते थे बल्कि धर्म को सैद्धान्तिक एवं नैतिकता को व्यवहारिक माना। यह विचार वर्तमान शिक्षा के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगा।

6.6 स्त्रियों को पुरूषों के समान शिक्षा देने पर बल : टैगोर जी के अनुसार जो जानने योग्य है वही तो ज्ञान है और इसे स्त्री और पुरूषों के द्वारा समान रूप से जानना चाहिए। उन्होने स्त्रियों को सैद्धान्तिक शिक्षा न देकर बल्कि व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार करने का प्रयत्न किया। उन्होने स्त्री शिक्षा के लिए स्वतंत्र विभाग स्थापित किया जिसके कारण स्त्री शिक्षा के प्रति भारतीयों की चेतना विकसित हुई।

6.7 ग्रामीण शिक्षा की व्यवस्था : टैगोर जी पहले शिक्षा दार्शनिक थे जिनका ध्यान उपेक्षित ग्रामीणों की शिक्षा की ओर गया। इन्होनें ग्रामीण जीवन को समुन्नत करने के लिए श्री निकेतन विभाग की स्थापना की। जिसमें शैक्षिक ज्ञान के साथ कृषि, कुटीर उद्योग, पशुपालन ग्रामीण आदि की शिक्षा दी जाती थी। यह उनका योगदान भारतीय समाज और भारतीय परिस्थिति के लिए बहुत ही उपयुक्त है। क्योंकि भारत गाँवो का देश है जहाँ 80 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और जब तक गाँव का अन्तिम व्यक्ति विकसित नही होगा तब तक देश का विकास सम्भव नही है यही परिकल्पना आचार्य विनोवा भावे और महात्मां गाँधी जी का भी है।

6.8 टैगोर जी एक महान कवि, दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री तथा कला प्रेमी थे। उन्होनें सभी दार्शनिक विचारों का संश्लेषण करके एक नवीन विचार प्रस्तुत की। उनका शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय वह प्रतिमान है जिसमें यदि वैदिक काल की गुरू शिष्य परम्परा तथा आश्रम व्यवस्था है तो वही मध्यकाल युग का ललित कला और संगीत का समावेश इसके अतिरिक्त आधुनिक युग के कृषि एवं विज्ञान को कम महत्व नही दिया गया है।

6.9 गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी ने शिक्षा का पूर्ण अर्थ दिया उन्होनें शिक्षा द्वारा पूर्ण मनुष्य की कल्पना की। टैगोर जी ने भौतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों का समन्वय किया वह आधुनिक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ।

6.10 गुरूदेव जी ने युद्धरत मानव समाज में सहयोग एवं सामन्जस्य का भाव विकसित करने के लिए छात्रों एवं अध्यापकों में अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना चाहते थे जो आधुनिक शिक्षा के लिए ग्राहय होगा।

6.11 गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर जी शिक्षा को पुस्तक केन्द्रित बनाने के विरोधी थे। वे अनुभव एवं क्रिया प्रधान शिक्षा पर बल देना चाहते थे वे छोटे बच्चों पर पाठ्य पुस्तकों के बोझ को नहीं डालना चाहतें थे। उनका मानना था कि बालक जीवन की सही शिक्षा प्रकृति से प्राप्त कर सकता है ऊँची कक्षाओं में पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग किया जा सकता है यह विचार आधुनिक शिक्षा के लिए ग्राह्य सिद्ध होगा।

6.12 1 मई 1916 ई0 में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने निर्धनता को ऐसी पाठशाला बताया जिसमें बच्चा जीवन का प्रथम पाठ पढ़ता है, तथा सर्वोत्तम प्रशिक्षण पाता है। सम्पन्न व्यक्ति के बच्चों को भी निर्धनतम माता–पिता के बच्चो की तरह चलना सीखना होता है। निर्धनता हमें जीवन तथा संसार के सम्पूर्ण सम्पर्क में लाता है टैगोर अध्यापकों को दी जाने वाली अत्यन्त ही अल्प सुविधाओं के सम्बन्ध में कहते है ''मैं अपने विद्यालय के अध्यापकों के लिए न्यूनतम सुविधायें प्रदान करता हूँ। इसलिए नहीं कि गरीबी है वरन् इसलिए कि यह व्यक्ति को विश्व का बेहतर अनुभव प्रदान करता है। इन्ही आदर्शो को ध्यान में रखकर शान्ति निकेतन का जीवन आराम दायक नहीं बनाया गया था।

7. उपसंहार

1. टैगोर ने बालक के सर्वांगीण विकास हेतु माता की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार किया है।
2. भारतीय शिक्षा दर्शन पर टैगोर की अमिट छाप दिखायी देती है।
3. रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक आदर्शवादी हैं, मानववाद के पक्षधर है।
4. टैगोर एक उच्चकोटि के अन्तर्राष्ट्रीयतावादी थे। उन्होने पूर्व और पश्चिम का अभूतपूर्व समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया।
5. टैगोर के अनुसार शिक्षण सजीव होना चाहिए, शिक्षण में सजीवता लाने के लिए बालक की रुचियों एवं संवेगों पर ही विधि आधारित हो। यहाँ पर संवेगों पर ध्यान देना चाहिए।
6. टैगोर के अनुसार छात्र और शिक्षक का सम्बन्ध अनौपचारिक नहीं होना चाहिए।

8. संदर्भ

1. अजीत, ज्ञान कुमारी – सेवा की त्रिवेणी, उ.प्र. पूर्वी रीजन, टी. ओ.एस. इलाहाबाद, 2002।
2. अय्यर, सी.पी. रामास्वामी – एनी बेसेण्ट, पब्लिकेशंस डिवीजन, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1992।
3. ओड, लक्ष्मी लाल के – शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1994।
4. गुप्त, लक्ष्मी नारायण – महान, पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992।
5. गुप्ता, एस.पी. – भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998।
6. जोशी, शान्ति – समसामयिक भारतीय, दार्शनिक लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1975।
7. लाड, अशोक कुमार – भारतीय दर्शन में मोक्ष चिन्तन एक तुलनात्मक अध्ययन, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1973।
8. वर्मा, वैद्यनाथ प्रसाद – विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1972।
9. Tagore - Creative unity
10. Tagore - Gitanjali.
11. Tagore - Nationalism (Lectures delivered in Japan and U.S.A.
12. Tagore - The religion of Man (Hibbert Lectures).
13. रमन बिहारी लालः शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय आधार पृष्ठ 822।